A Historical Study of Santhal Culture and Traditions

संताल संस्कृति और परंपराओं का ऐतिहासिक अध्ययन

Sumitra Hembrom, Assistant Professor, Department of History, S.P. College, Dumka
sumitrahembromdmk@gmail.com

सारांश

संताल जनजाति भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में से एक है, जिसकी सांस्कृतिक परंपराएँ, सामाजिक संगठन, धार्मिक विश्वास और ऐतिहासिक अनुभव अत्यंत समृद्ध, बहुआयामी और विशिष्ट हैं। यह समुदाय मुख्यतः पूर्वी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करता है और अपनी विशिष्ट जीवन शैली, प्रकृति के साथ गहरे संबंध तथा सामुदायिक संरचना के लिए जाना जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र संताल समाज की उत्पत्ति, ऐतिहासिक विकास, सामाजिक संरचना, धार्मिक व्यवस्था, आर्थिक जीवन, भाषा, कला और पारंपरिक प्रशासनिक प्रणाली का व्यापक और गहन विश्लेषण करता है। इसके साथ ही औपनिवेशिक हस्तक्षेप, भूमि संबंधी परिवर्तन, महाजनी शोषण तथा आधुनिकता, शहरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभावों को भी आलोचनात्मक दृष्टि से समझने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि संताल संस्कृति केवल स्थिर परंपराओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक गतिशील, अनुकूलनशील और परिवर्तनशील सामाजिक व्यवस्था है, जो समय-समय पर बाहरी चुनौतियों का सामना करते हुए स्वयं को पुनर्गठित करती रहती है। आधुनिकता के प्रभावों के बावजूद यह संस्कृति अपनी मूल पहचान, सामुदायिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने का सतत प्रयास करती है, जो इसकी जीवंतता और स्थायित्व को दर्शाता है।

कुंजी शब्द : संताल, आदिवासी, सामाजिक संरचना, धार्मिक व्यवस्था, आर्थिक जीवन, पारंपरिक प्रशासनिक प्रणाली, आधुनिकतावाद ।

1. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण आयाम उसका जनजातीय समाज है, जो देश की प्राचीनता, बहुलता और सांस्कृतिक निरंतरता का जीवंत प्रतीक है। जनजातीय समुदाय न केवल भौगोलिक रूप से विविध हैं, बल्कि उनकी जीवन-पद्धति, भाषा, परंपराएँ और विश्वदृष्टि भी अत्यंत विशिष्ट और समृद्ध हैं। इन्हीं समुदायों में संताल जनजाति एक प्रमुख और प्रभावशाली समुदाय के रूप में उभरती है, जो मुख्यतः झारखंड, पश्चिम बंगाल, बिहार, असम और ओडिशा के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करती है। संताल समाज अपनी विशिष्ट जीवन शैली, प्रकृति-आधारित संस्कृति, सामूहिक जीवन व्यवस्था, पारंपरिक संस्थाओं और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। संतालों का जीवन प्रकृति के साथ गहरे सामंजस्य पर आधारित है, जहाँ जंगल, भूमि, जल और पर्यावरण केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न अंग हैं। उनकी सामाजिक संरचना सामुदायिक सहयोग, पारस्परिक निर्भरता और परंपरागत मूल्यों पर आधारित है, जो उन्हें एक संगठित और सुदृढ़ समाज बनाती है। उनके त्योहार, नृत्य, संगीत और अनुष्ठान न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम हैं, बल्कि सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना को भी सुदृढ़ करते हैं। संताल संस्कृति का अध्ययन केवल एक जनजातीय समुदाय के इतिहास और परंपराओं को समझने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज में सांस्कृतिक बहुलता, सह-अस्तित्व, सामाजिक परिवर्तन और विकास की प्रक्रियाओं को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार एक पारंपरिक समाज आधुनिकता, वैश्वीकरण और सामाजिक परिवर्तन की चुनौतियों के बीच अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए स्वयं को अनुकूलित करता है। इस प्रकार, संताल संस्कृति भारतीय समाज की समग्रता और विविधता को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करती है।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

संतालों का इतिहास मुख्यतः मौखिक परंपराओं, लोकगीतों, मिथकों और सामुदायिक स्मृतियों के माध्यम से संरक्षित है। इनकी ऐतिहासिक चेतना लिखित ग्रंथों की अपेक्षा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों—जैसे गीत, कथाएँ, अनुष्ठान और प्रतीकों—में अधिक दिखाई देती है। यही कारण है कि संताल इतिहास का पुनर्निर्माण एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है, जिसमें मानवशास्त्रीय, लोकसाहित्यिक और ऐतिहासिक स्रोतों का समन्वय आवश्यक है। मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से संतालों को सामान्यतः प्रोटो-ऑस्ट्रालॉइड समूह से संबंधित माना जाता है, जिनकी शारीरिक विशेषताएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन निवासियों से जुड़ी हुई मानी जाती हैं। उनका प्रारंभिक निवास क्षेत्र छोटानागपुर पठार माना जाता है, जो प्राकृतिक

संसाधनों से समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से विविध क्षेत्र रहा है। समय के साथ संताल समुदाय विभिन्न कारणों, जैसे संसाधनों की उपलब्धता, पर्यावरणीय परिस्थितियाँ और सामाजिक-आर्थिक दबाव के चलते झारखंड, पश्चिम बंगाल, बिहार और ओडिशा के विभिन्न भागों में फैल गया। इस विस्तार की प्रक्रिया में उन्होंने अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को अनुकूलित भी किया। संतालों के ऐतिहासिक विकास में औपनिवेशिक काल एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में सामने आता है। ब्रिटिश शासन ने उन्हें "दामिन-ए-कोह" क्षेत्र में बसाया, जहाँ उनसे अपेक्षा की गई कि वे जंगलों को साफ कर कृषि योग्य भूमि तैयार करें। प्रारंभिक चरण में यह व्यवस्था संतालों के लिए लाभकारी प्रतीत हुई, क्योंकि उन्हें भूमि और आजीविका के अवसर प्राप्त हुए। उन्होंने कृषि आधारित जीवन शैली विकसित की और एक संगठित ग्रामीण समाज का निर्माण किया। किन्तु समय के साथ यह क्षेत्र शोषण का केंद्र बन गया। जमींदारों, महाजनों और औपनिवेशिक अधिकारियों के बढ़ते हस्तक्षेप ने संतालों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को कमजोर कर दिया। अत्यधिक कर वसूली, ऋणग्रस्तता, भूमि से बेदखली और बेरोजगारी जैसी समस्याओं ने उनके जीवन को संकटग्रस्त बना दिया। इसके साथ ही बाहरी लोगों (दिकू) का प्रवेश उनके पारंपरिक सामाजिक ढाँचे और सांस्कृतिक संतुलन के लिए चुनौती बन गया था। इन परिस्थितियों ने संताल समाज में असंतोष और प्रतिरोध की भावना को जन्म दिया, जो आगे चलकर ऐतिहासिक विद्रोह, विशेष रूप से 1855–56 के संताल हूल के रूप में प्रकट हुई। इस प्रकार संतालों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि केवल उनके उत्पत्ति और विस्तार की कहानी नहीं है, बल्कि यह संघर्ष, अनुकूलन और सांस्कृतिक निरंतरता की भी कथा है, जो उनके सामूहिक जीवन और पहचान को गहराई से प्रभावित करती है।

3. सामाजिक संरचना

संताल समाज एक अत्यंत संगठित, सामुदायिक और परंपरा-आधारित सामाजिक व्यवस्था का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसमें सामाजिक संबंधों का मूल आधार नातेदारी (kinship), सामूहिकता और पारंपरिक मान्यताएँ होती हैं। यह समाज व्यक्तिवाद की अपेक्षा सामुदायिक जीवन को अधिक महत्व देता है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति की पहचान उसके परिवार, कुल और समुदाय से निर्धारित होती है। सामाजिक संगठन इस प्रकार निर्मित है कि यह न केवल दैनिक जीवन को व्यवस्थित करता है, बल्कि सामाजिक नियंत्रण, सहयोग और सांस्कृतिक निरंतरता को भी बनाए रखता है।

(i) परिवार व्यवस्था

संताल समाज में परिवार सामाजिक संगठन की मूल इकाई है, जो पितृसत्तात्मक और पितृवंशीय प्रकृति का होता है। परिवार में पिता या सबसे वरिष्ठ पुरुष सदस्य को प्रमुख स्थान प्राप्त होता है, जो आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वंश पिता के माध्यम से चलता है, और संपत्ति का उत्तराधिकार भी प्रायः पुरुष सदस्यों को प्राप्त होता है। विवाह के बाद स्त्री अपने पति के घर में रहती है, जिससे परिवार की संरचना और भी स्पष्ट रूप से पितृकेंद्रित बनती है। हालाँकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि संताल समाज में महिलाओं की भूमिका केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं है; वे कृषि, पारिवारिक निर्णयों और सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। इस प्रकार परिवार एक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इकाई के रूप में कार्य करता है, जो समाज की स्थिरता और निरंतरता को सुनिश्चित करता है।

(ii) कुल व्यवस्था

संताल समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसकी कुल व्यवस्था है, जो सामाजिक पहचान और संबंधों का आधार बनती है। प्रत्येक संताल व्यक्ति किसी न किसी कुल से संबंधित होता है, जैसे—मुर्मू, सोरेन, हेम्ब्रम, किस्कू, टुडू, मारांडी, बासकी, हँसदा, बेसरा, चोंड़े, बेदिया एवं पावरिया। कुल व्यवस्था केवल नाम या पहचान का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह सामाजिक व्यवहार, विवाह नियमों और पारस्परिक संबंधों को भी नियंत्रित करती है। संताल समाज में समान कुल में विवाह निषिद्ध होता है, क्योंकि एक ही कुल के सदस्यों को रक्त संबंध का माना जाता है। इस प्रकार कुल व्यवस्था—

- सामाजिक अनुशासन बनाए रखती है
- विवाह संबंधों को नियंत्रित करती है
- समुदाय में एकता और पहचान को मजबूत करती है

यह व्यवस्था संताल समाज में सामाजिक संगठन और संरचना की आधारशिला है।

(iii) विवाह प्रणाली

संताल समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था है, जो केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों और कुलों का संबंध स्थापित करता है। विवाह सामाजिक जीवन की निरंतरता और वंश विस्तार का माध्यम होता है। संताल समाज में विभिन्न प्रकार की विवाह प्रथाएँ पाई जाती हैं, जो उनकी सामाजिक लचीलापन को दर्शाती हैं—

- **पारंपरिक विवाह :** यह सबसे सामान्य और सामाजिक रूप से स्वीकृत विवाह है, जिसमें परिवारों की सहमति और पारंपरिक अनुष्ठानों का पालन किया जाता है।

- **सहमति विवाह :** इसमें लड़का और लड़की की आपसी सहमति महत्वपूर्ण होती है, जो आधुनिक प्रभावों के साथ-साथ पारंपरिक समाज में परिवर्तन को दर्शाती है।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य रूप जैसे अपहरण विवाह या विधवा पुनर्विवाह भी कुछ परिस्थितियों में स्वीकार्य होते हैं, जो इस समाज की व्यावहारिकता और अनुकूलनशीलता को दर्शाते हैं। संताल समाज में विवाह का उद्देश्य केवल दाम्पत्य संबंध स्थापित करना नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, नातेदारी संबंधों का विस्तार और सांस्कृतिक मूल्यों की निरंतरता सुनिश्चित करना भी है।

4. धार्मिक विश्वास और विश्वदृष्टि

संताल धर्म मूलतः आत्मवाद और प्रकृति-पूजा पर आधारित एक जीवंत और अनुभवात्मक धार्मिक व्यवस्था है, जिसमें प्रकृति के प्रत्येक तत्व जैसे जंगल, पहाड़, नदी, सूर्य, पृथ्वी और पूर्वज को पवित्र माना जाता है। संतालों की धार्मिक विश्वदृष्टि में मानव और प्रकृति के बीच कोई कठोर विभाजन नहीं है; दोनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं और परस्पर निर्भरता के संबंध में स्थित हैं। संताल समाज "बोंगा " नामक अदृश्य अलौकिक शक्तियों या आत्माओं में विश्वास करता है, जिन्हें विभिन्न रूपों में विभाजित किया जाता है कुछ शुभ होती हैं, जो सुरक्षा और समृद्धि प्रदान करती हैं, जबकि कुछ अशुभ मानी जाती हैं, जिनसे बचाव के लिए अनुष्ठान किए जाते हैं। इन बोंगा आत्माओं का संबंध प्राकृतिक शक्तियों, स्थानों और पूर्वजों से होता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संताल धर्म में प्रकृति, पूर्वज और आध्यात्मिकता का घनिष्ठ समन्वय है। संतालों के सर्वोच्च देवता "मरांग बुरु" हैं, जिन्हें महान पर्वत या सर्वोच्च शक्ति के रूप में माना जाता है। वे सृष्टि के संरक्षक और नैतिक व्यवस्था के प्रतीक हैं। इनके अतिरिक्त "जाहेर एरा" (वन देवी) जैसी अन्य देव शक्तियाँ भी महत्वपूर्ण हैं, जो प्राकृतिक संतुलन और जीवन की निरंतरता से जुड़ी होती हैं। धार्मिक अनुष्ठानों का मुख्य केंद्र "जाहेर थान" होता है, जो गाँव के निकट स्थित एक पवित्र उपवन होता है। यह स्थान केवल पूजा का स्थल ही नहीं, बल्कि समुदाय की सामूहिक धार्मिक चेतना का प्रतीक भी है। यहाँ पर सामूहिक अनुष्ठान, बलि, पूजा और त्योहार आयोजित किए जाते हैं, जिनका संचालन "नायके" (पुजारी) द्वारा किया जाता है।

संताल धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके संपूर्ण सामाजिक जीवन का मार्गदर्शक है। यह—

- **नैतिक जीवन का मार्गदर्शन करता है**, जैसे—सत्य, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी
- **सामाजिक नियमों और आचार संहिता को निर्धारित करता है**, जिससे सामाजिक नियंत्रण बना रहता है
- **प्रकृति और मनुष्य के संबंध को संतुलित करता है**, जिससे पर्यावरणीय संतुलन और संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित होता है, इसके अतिरिक्त, संताल धार्मिक व्यवस्था में त्योहारों, नृत्य, संगीत और अनुष्ठानों का विशेष महत्व होता है, जो केवल धार्मिक क्रियाएँ नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता के साधन भी हैं।

इस प्रकार, संताल धर्म एक समग्र, अनुभवात्मक और सामुदायिक जीवन-दर्शन प्रस्तुत करता है, जिसमें आध्यात्मिकता, प्रकृति और सामाजिक जीवन एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। यह न केवल विश्वास प्रणाली है, बल्कि एक ऐसी जीवन-पद्धति है, जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करती है।

5. त्योहार और सांस्कृतिक जीवन

संताल समाज में त्योहार केवल उत्सव के अवसर नहीं होते, बल्कि वे उनके सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक आस्था, सामाजिक एकता और प्रकृति के साथ संबंध के जीवंत प्रतीक हैं। संतालों के अधिकांश त्योहार कृषि चक्र, ऋतु परिवर्तन और प्राकृतिक तत्वों से गहराई से जुड़े होते हैं, जो यह दर्शाते हैं कि उनका जीवन प्रकृति के साथ घनिष्ठ सामंजस्य में विकसित हुआ है। ये त्योहार सामूहिक रूप से मनाए जाते हैं और इनमें पूरे गाँव की भागीदारी होती है, जिससे सामुदायिक भावना और सामाजिक एकजुटता मजबूत होती है।

प्रमुख त्योहारों का महत्व

- **सोहराय :** यह संतालों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है, जो फसल कटाई और पशुधन से संबंधित होता है। इस अवसर पर गाय-बैल जैसे पशुओं की पूजा की जाती है और उन्हें सजाया जाता है। घरों की दीवारों पर पारंपरिक चित्रकला बनाई जाती है, जो उनकी कला और सौंदर्यबोध को दर्शाती है। यह त्योहार समृद्धि, आभार और सामूहिक उत्सव का प्रतीक है।
- **बाहा :** यह फूलों और वसंत ऋतु का त्योहार है, जो प्रकृति के पुनर्जन्म और सौंदर्य का प्रतीक है। इस अवसर पर नए फूलों की पूजा की जाती है और यह त्योहार युवाओं के लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसमें सामाजिक मेल-मिलाप और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम

इन सभी त्योहारों में नृत्य, संगीत और सामूहिक भोज का विशेष महत्व होता है।

- **नृत्य:** संताल नृत्य सामूहिक और लयबद्ध होता है, जिसमें पुरुष और महिलाएँ एक साथ भाग लेते हैं। यह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है।
- **संगीत:** पारंपरिक वाद्ययंत्र, जैसे ढोल, मांदर, तिरियो (बाँसुरी) के साथ गाए जाने वाले गीत उनके इतिहास, भावनाओं और जीवन अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं।
- **सामूहिक भोज:** भोजन का सामूहिक सेवन सामाजिक समानता और भाईचारे का प्रतीक होता है, जिसमें सभी सदस्य एक साथ भाग लेते हैं।

6. आर्थिक जीवन

संतालों का आर्थिक जीवन परंपरागत रूप से प्रकृति, भूमि और सामुदायिक श्रम पर आधारित रहा है। उनकी अर्थव्यवस्था लंबे समय तक आत्मनिर्भर रही, जिसमें उत्पादन मुख्यतः जीवन-यापन के लिए होता था, न कि बाजार के लिए। प्राकृतिक संसाधनों के साथ उनका घनिष्ठ संबंध उनकी आजीविका, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। समय के साथ, विशेषकर औपनिवेशिक हस्तक्षेप और आधुनिकता के प्रभाव से, उनके आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं, जिसके परिणामस्वरूप आज पारंपरिक और आधुनिक आर्थिक तत्वों का एक मिश्रित रूप देखने को मिलता है।

(i) कृषि

कृषि संतालों के आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार है। वे मुख्यतः वर्षा-आधारित कृषि करते हैं, जो प्राकृतिक परिस्थितियों पर निर्भर होती है।

- धान उनकी प्रमुख फसल है, जो उनके भोजन और सांस्कृतिक जीवन दोनों का केंद्र है।
- इसके अतिरिक्त मक्का, बाजरा, दालें और सब्जियाँ भी उगाई जाती हैं।
- पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ, जैसे सामूहिक श्रम, स्थानीय बीजों का उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता, अब भी प्रचलित हैं।

कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का भी अभिन्न अंग है, क्योंकि कई त्योहार और अनुष्ठान कृषि चक्र से जुड़े होते हैं।

(ii) वन संसाधन

संतालों के जीवन में वन संसाधनों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। जंगल उनके लिए केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन और संस्कृति का आधार हैं।

- वे फल, कंद-मूल, लकड़ी, जड़ी-बूटियाँ और लघु वनोपज का संग्रह करते हैं।
- वन उत्पादों का उपयोग भोजन, ईंधन, औषधि और निर्माण कार्यों में किया जाता है।
- कुछ वन उत्पादों का स्थानीय बाजार में विक्रय भी किया जाता है, जिससे अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

वन और संताल जीवन के बीच यह संबंध उनकी पर्यावरणीय समझ और प्रकृति के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

(iii) श्रम और रोजगार

आधुनिक समय में संतालों के आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। पारंपरिक कृषि और वन-आधारित जीवन के साथ-साथ अब वे विभिन्न प्रकार के श्रम और रोजगार में भी संलग्न हो रहे हैं—

- **औद्योगिक कार्य :** कई संताल लोग कारखानों, खदानों और उद्योगों में काम करने लगे हैं।
- **निर्माण कार्य :** भवन निर्माण और सड़क निर्माण जैसे कार्यों में उनकी भागीदारी बढ़ी है।
- **शहरी मजदूरी :** रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन भी बढ़ा है।

यह परिवर्तन उनकी आर्थिक आवश्यकताओं, भूमि की कमी और आधुनिक अवसरों के विस्तार का परिणाम है।

(iv) आर्थिक परिवर्तन और मिश्रित स्वरूप

आज संताल अर्थव्यवस्था में पारंपरिक और आधुनिक दोनों तत्वों का सह-अस्तित्व दिखाई देता है—

- एक ओर वे कृषि और वन संसाधनों पर निर्भर हैं।
- दूसरी ओर वे बाजार अर्थव्यवस्था और मजदूरी आधारित कार्यों से भी जुड़े हैं।

यह स्थिति एक संक्रमणशील अर्थव्यवस्था को दर्शाती है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

7. पारंपरिक प्रशासनिक व्यवस्था

संताल समाज में स्वशासन की एक सुदृढ़ और विकसित परंपरा विद्यमान है, जो उनकी सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण आधार है। यह व्यवस्था केवल प्रशासनिक ढाँचा नहीं, बल्कि सामाजिक नियंत्रण, सांस्कृतिक संरक्षण और सामुदायिक जीवन के संतुलन को बनाए रखने का एक प्रभावी माध्यम है। संतालों की यह पारंपरिक शासन प्रणाली "मांझी परगना व्यवस्था" के नाम से जानी जाती है, जो स्थानीय स्तर पर लोकतांत्रिक मूल्यों और सामूहिक निर्णय प्रक्रिया को दर्शाती है।

इस व्यवस्था में विभिन्न पदाधिकारियों की स्पष्ट भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ निर्धारित होती हैं, जो समाज के सुचारु संचालन में योगदान देती हैं—

- **मांझी :** यह गाँव का प्रधान होता है और प्रशासनिक, सामाजिक तथा न्यायिक कार्यों का मुख्य उत्तरदायी होता है। मांझी समुदाय के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है और सामाजिक नियमों के पालन को सुनिश्चित करता है।
- **जोग मांझी :** यह युवा वर्ग का नेता होता है, जो सामाजिक अनुशासन बनाए रखने और युवाओं को पारंपरिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने का कार्य करता है।
- **नायके :** यह धार्मिक प्रमुख होता है, जो पूजा-अनुष्ठानों का संचालन करता है और धार्मिक जीवन को व्यवस्थित करता है।
- **परगनैत :** यह कई गाँवों का प्रमुख होता है और क्षेत्रीय स्तर पर प्रशासनिक कार्यों का समन्वय करता है। यह उच्च स्तर के विवादों के समाधान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इनके अतिरिक्त **"गोडेत "** (संदेशवाहक) जैसे अन्य पद भी होते हैं, जो प्रशासनिक कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करने में सहायक होते हैं।

कार्य और महत्व

संतालों की यह पारंपरिक प्रशासनिक व्यवस्था कई महत्वपूर्ण कार्यों का निर्वहन करती है—

- **सामाजिक नियंत्रण बनाए रखना :** यह व्यवस्था सामाजिक नियमों, रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन सुनिश्चित करती है, जिससे समाज में अनुशासन और संतुलन बना रहता है।
- **विवादों का समाधान :** पारिवारिक, वैवाहिक और सामुदायिक विवादों का समाधान स्थानीय स्तर पर किया जाता है, जिससे न्याय त्वरित और सुलभ होता है।
- **सामूहिक जीवन का संगठन :** यह व्यवस्था सामाजिक गतिविधियों, त्योहारों और सामूहिक निर्णयों को व्यवस्थित करती है, जिससे समुदाय में एकता और सहयोग बना रहता है।
- **सांस्कृतिक संरक्षण :** पारंपरिक संस्थाएँ सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और सामाजिक मानदंडों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

08. निष्कर्ष

संताल संस्कृति भारतीय जनजातीय जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिनिधि उदाहरण प्रस्तुत करती है, जो मूलतः प्रकृति के साथ गहरे सामंजस्य, सामूहिक जीवन-व्यवस्था और सांस्कृतिक निरंतरता पर आधारित है। संताल समाज में प्रकृति केवल जीवन-यापन का साधन नहीं, बल्कि अस्तित्व का अभिन्न अंग है—जंगल, भूमि, जल और ऋतुएँ उनके धार्मिक विश्वासों, त्योहारों और दैनिक जीवन से घनिष्ठ रूप से जुड़ी होती हैं। इसी प्रकार, उनकी सामाजिक संरचना में सामूहिकता का विशेष महत्व है, जहाँ व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा सामुदायिक हितों को प्राथमिकता दी जाती है। परिवार, कुल और गाँव के स्तर पर सहयोग, सहभागिता और पारस्परिक निर्भरता उनके सामाजिक जीवन को सुदृढ़ बनाती है। संताल संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता उसकी सांस्कृतिक निरंतरता है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परंपराओं, रीति-रिवाजों, लोककथाओं, गीतों और अनुष्ठानों के माध्यम से संरक्षित रहती आई है। यह निरंतरता केवल अतीत को संरक्षित करने का माध्यम नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए सांस्कृतिक दिशा भी प्रदान करती है। हालाँकि, आधुनिकता, वैश्वीकरण, शहरीकरण और आर्थिक परिवर्तनों के प्रभाव से संताल समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है—जैसे सांस्कृतिक क्षरण, पारंपरिक मूल्यों का कमजोर होना और पहचान का संकट। इसके बावजूद संताल समुदाय अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत है। वे आधुनिक शिक्षा और रोजगार के अवसरों को अपनाते हुए भी अपने त्योहारों, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों को संरक्षित रखने का प्रयास करते आए हैं। इस प्रकार, यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि संताल संस्कृति केवल अतीत की स्थिर धरोहर नहीं है, बल्कि एक जीवंत, गतिशील और अनुकूलनशील सामाजिक व्यवस्था है, जो बदलते समय के साथ स्वयं को पुनर्गठित करती हुई अपनी मूल पहचान और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में सक्षम है।

संदर्भ सूची :

1. Elwin, V. (1964). *The tribal world of India*. Oxford University Press.
2. Majumdar, D. N. (1958). *Races and cultures of India*. Asia Publishing House.

3. Vidyarthi, L. P., & Rai, B. K. (1977). *The tribal culture of India*. Concept Publishing Company.
4. Roy, S. C. (1912). *The Mundas and their country*. Crown Publications.
5. O'Malley, L. S. S. (1910). *Bengal district gazetteers: Santal Parganas*. Bengal Secretariat Press.
6. Hunter, W. W. (1877). *A statistical account of Bengal*. Trübner & Co.
7. Sinha, S. C. (1962). *State formation and Rajput myth in tribal central India*. Man in India, 42(1), 35–80.
8. Beteille, A. (1991). *Society and politics in India: Essays in a comparative perspective*. Oxford University Press.